बुद्ध युगीन भारत की धार्मिक स्थिति एवं शासन प्रणाली

डॉ. राज बहादुर यादव

बौद्धधर्म के उद्‌भव के पूर्व वैदिक धर्मानुयायी पशुयज्ञ को वैसा ही महत्वपूर्ण मानते थे जैसा वैदिक युग के आर्य। वे अनेक प्रकार के यज्ञों का अनुष्ठान करते थे, जैसे– अश्वमेध यज्ञ, पुरुषमेघ यज्ञ, वाजपेय यज्ञ आदि। यज्ञों के प्रमुख अनुष्ठानकर्ता ब्राह्मण महासाल थे। वे स्वयं बड़े–बड़े यज्ञ करते थे एवं राजा द्वारा आयोजित यज्ञों में 'होता' का कार्य सम्पन्न करते थे। महायज्ञों में गाय, वृषभ, बछड़े, बछियाँ, बकरे, भेड़, सुअर, घोड़े, हाथी आदि पशुओं की तथा अनेक पक्षियों की बलि दी जाती थी। इससे विदित होता है कि जिन पशुओं की बलि देने की प्रथा वैदिक युग में नहीं थी उनकी बलि दी जाने लगी थी, जैसे हाथी। यज्ञों में आडम्बर के बढ़ जाने से यज्ञ केवल घनाढ्यों तक सीमित रह गया, उसमें सही भावनाओं एवं विश्वासों का अभाव हो गया था। यज्ञों की अधिकता एवं जटिलता के कारण पुरोहितों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती गई। सत्रह व्यक्तियों द्वारा किये जाने वाले यज्ञ कितने अपव्ययात्मक होते रहे होंगे, इसका सहज अनुमान नहीं लगाया जा सकता। जहां एक ओर समाज के निम्नवर्ग को मान्यता देकर धर्म को व्यापक स्वरूप प्रदान किया जा रहा था वहीं दूसरी ओर ब्राह्मण धर्म में जटिलता को प्रश्रय मिलने के कारण समाज एक संकुचित विचारधारा की ओर मुड़ने लगा था।